454 वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

वर्ष 38 | एकादश अंक | जून 2016

इस अंक में...

12 विश्वास और प्रार्थना-आत्मा के पोषक तत्व
14 राष्ट्रीय घटनाक्रम
23 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
31 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य
41 नवीनतम सामान्य ज्ञान
46 खेलकूद
49 रोजगार समाचार
51 सिविल सेवा परीक्षा 2016 : सफल होने के लिए क्षमता दिखाएं
53 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
56 युवा प्रतिभाएं
64 भारत 2015-16
68 स्मरणीय तथ्य
72 विश्व परिदृश्य
79 फोकस-अनुसूचित जातियों एवं अनुसूचित जनजातियों के विरुद्ध अत्याचारों और उत्पीड़न की रोकथाम
82 आर्थिक लेख—सामाजिक बदलाव हेतु वित्तीय समावेशन की दशा एवं दिशा
84 औद्योगिक लेख—सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों की उपादेयता : मेक इन इण्डिया के परिप्रेक्ष्य में
86 द्विपक्षीय सम्बन्ध—प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की ब्रिटेन यात्रा : भारत और ब्रिटेन के बीच सम्बन्धों के नए अध्याय का सूत्रपात
90 नारी जगत्—आधी दुनिया का पूरा सच ?
94 ऐतिहासिक लेख—(i) विशिष्ट महत्व है बिहार के जैन तीर्थों का
96 (ii) जियाउद्दीन बरनी और उनका इतिहास-लेखन
98 स्थानीय स्वशासन—भारत में पंचायती राज : कल, आज और कल
102 संवैधानिक लेख—(i) मौत की सजा पर विधि आयोग की रिपोर्ट : खत्म हो मौत की सजा
103 (ii) क्या है अनुच्छेद—356 ?
104 शैक्षिक लेख—शिक्षा का अधिकार या समान शिक्षा का अधिकार
107 पर्यावरण लेख—पर्यावरण बचाने के लिए जारी प्रयास
109 कृषक सुरक्षा लेख—प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना : कृषकों के हितों का संरक्षण
111 सार संग्रह
115 वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान (i) उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग मेडिकल ऑफीसर स्क्रीनिंग टेस्ट 'होमियोपैथी' 2015
117 (ii) मध्य प्रदेश पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा, 2015
123 (iii) मध्य प्रदेश राज्य सेवा प्रारम्भिक परीक्षा, 2015
132 अंतरवैयक्तिक संचार—आगामी संघ एवं राज्य लोक सेवा आयोग प्रारम्भिक परीक्षा हेतु विशेष
134 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता
136 ऐच्छिक विषय—(i) मनोविज्ञान—यू.जी.सी.नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2015
142 (ii) शिक्षा—यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2015
148 (iii) समाजशास्त्र—उत्तर प्रदेश प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2013
155 वार्षिक रिपोर्ट 2014-15—पशुपालन डेयरिंग एवं मत्स्यिकी क्षेत्र विकास की वर्तमान स्थिति-एक दृष्टि में
158 तेलंगाना राज्य से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तथ्य : एक दृष्टि में
160 तर्कशक्ति एस.बी.आई.असिस्टेंट मैनेजर (सिस्टम) परीक्षा, 2015
165 संख्यात्मक अभियोग्यता—आई.बी.पी.एस. द्वारा आयोजित बैंक आई.टी. ऑफीसर परीक्षा, 2016
171 क्या आप जानते हैं ?
172 अपना ज्ञान बढ़ाइए
173 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—डिजिटल भारत के लिए 'नेट' तटस्थता आवश्यक है
175 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक-443 का परिणाम
176 सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता क्रमांक—173

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. –सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

विश्वास और प्रार्थना–आत्मा के पोषक तत्व

–साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

Prayer with faith can move mountains. Prayer can save a sinking ship by ending the storm. Prayer can create miracles in your life. The most effective way to achieve health and success in every facet of Life is simple prayer.

विश्वास और प्रार्थना–यद्यपि दो अलग-अलग शब्द प्रतीत होते हैं, किन्तु हकीकत यह है कि आपका विश्वास ही आपकी प्रार्थना है और आपकी प्रार्थना आपका विश्वास प्रकट करने का जरिया, जब आप ईश्वर में, परमात्मा में अपना विश्वास प्रकट करते हुए कहते हैं कि मैं चाहे जानूँ या न जानूँ किन्तु आप हो ! आप हो और सर्वोच्च हो !! मैं चाहे आपको नहीं देख सकता हूँ, किन्तु आप मुझे देख सकते हो ! आप मेरे सारे कर्मों को–चाहे वे मैंने प्रकट रूप से किए हों चाहे गुप्त रूप से–आप उन्हें जानते हो. आप सर्वज्ञ हो ! आपकी कृपा से सब कुछ सम्भव है ! मैं अपने सारे कर्मों को आपकी साक्षी से सम्पन्न करता हूँ, अपने आपको आप में समर्पित करता हूँ ! मैं यह जानता हूँ कि आपको समर्पित हुए समस्त कर्म मेरे विकास में सहयोगी होंगे, मुझे सारे दोषों से बचाकर रखेंगे. मुझमें आपकी प्रेरणाएँ प्रवाहित करेंगे. मुझे सही समय पर उचित मार्गदर्शन देने वाले बनेंगे. मेरे द्वारा विश्व कल्याण के आपके महा-अभियान में सहयोगी बनेंगे. मैं आपकी कृपा को हर क्षण महसूस करता हुआ कृतज्ञ हूँ ! कृतज्ञ हूँ ! कृतज्ञ हूँ ! आपके दिव्य आशीषों का सतत् आभारी हूँ.

जब कोई व्यक्ति अपने भीतर परमात्मा की शक्तियों को महसूस करते हुए हर एक घटना के प्रति सकारात्मक भावनाएँ रखता है, तो वह प्रार्थनामय जिन्दगी जीता है. 'प्रार्थना' परमात्मा से कुछ चाहना या माँगना नहीं है. प्रार्थना परमात्मा से संवाद है. परमात्म शक्तियों का आभारी बनना है. प्रार्थना में कृतज्ञता है, समर्पण है. जो भी मिला उसके लिए भी और जो नहीं मिला, उसके लिए भी. प्रार्थनाशील हृदय जानता है कि 'इस प्रकृति में कहीं कोई अन्याय नहीं है.' सब कुछ उसकी रज़ा से हो रहा है. 'मैं' अपनी छोटी सोच या चाहना से इस विराट व्यवस्था को न तोलूँ, न ही इस पर किसी प्रकार का आक्षेप करूँ, प्रश्नचिह्न खड़ा करूँ कि ऐसा क्यों हो रहा है ? इससे अन्यथा होना चाहिए था.

'विराट' स्वयं व्यवस्थित है, स्वयं जानता है कि कहाँ कब क्या उचित है. इसलिए मैं इस विराट ब्रह्माण्ड की व्यवस्था करने वाले से कुछ नहीं माँगता, बस अपनी इच्छाओं का विलय उसी में कर देता हूँ. इस ब्रह्माण्ड की योग्यता में मैं अपनी योग्यता मिलाता हूँ. 'स्व' को सर्व में समर्पित कर देना प्रार्थना है. प्रार्थना अन्तस् के द्वार की उद्घाटना है. प्रार्थनामय स्वर जब हृदय से तरंगित होते हैं, तब सम्पूर्ण लोक में फैल जाते हैं. वे हमारी लघु चेतना में विराट का आह्वान बन जाते हैं. हमारी आत्मा को परमात्मा का साक्षात्कार करा देते हैं. विश्वास और प्रार्थना हमारी आत्मा में परमात्म शक्तियों का सम्पोषण करते हैं.